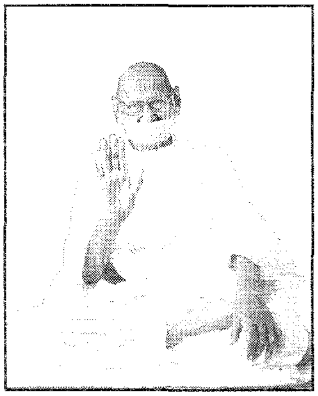

स्वतंत्रता दिवस पर आचार्यश्री महाप्रज्ञ का विशेष संदेश

स्वतंत्रता के छह दशक संपन्न हो गए। सातवें दशक का प्रारंभ हो रहा है। स्वतंत्रता का अपना मूल्य है और उसके साथ गुणात्मक विकास का और अधिक मूल्य है। इन छह दशकों में हिंदुस्तान के संचालकों ने, सरकारों ने, समाज ने जो किया है उसके दो पक्ष हैं – सकारात्मक पक्ष भी है और नकारात्मक पक्ष भी है। हर वस्तु के दो पक्ष होते हैं। आर्थिक क्षेत्र में, औद्योगिक क्षेत्र में, व्यावसायिक क्षेत्र में या भौतिक साधनों की सम्पनता के क्षेत्र में बहुत विकास किया है यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं है। फिर भी हमें दूसरे पक्ष को देखना जरूरी है। केवल विशेषता के पक्ष को ही नहीं, कमी पर भी हमारा ध्यान जाना चाहिए। वह कमी का पक्ष है चरित्रबल। संभवतः कुछ दशकों पहले चरित्र का जितना अधिक मूल्य था आज उसका ग्राफ नीचे हो गया है। नैतिकता कम हुई है, चरित्रता कम हुई है, आत्मविश्वास कम हुआ है, सदाचार कम हुआ है और कदाचार बढ़ा है। उससे समाज आज ह्रास की ओर बढ़ रहा है। बहुत अच्छा यही होता कि भौतिक विकास और आध्यात्मिक विकास में संतुलन बना रहता, किंतु बड़ा कठिन काम है। भौतिक विकास के प्रति जितना आकर्षण है, राग–द्वेष में जीने वाला प्राणी, पदार्थ जगत की सुविधा भोगने वाला प्राणी जितना उसमें रस लेता है उतना चरित्र में, नैतिकता में रस नहीं लेता। यदि परिणाम पर विचार करें तो कोई भी राष्ट्र चरित्र के बल और नैतिकता के बल के बिना बहुत लंबे समय तक अपने महत्त्व को नहीं बनाए रख सकता।

यह 15 अगस्त का दिन, स्वतंत्रता का दिन इसलिए मूल्यवान है कि आज हम आत्मनिरीक्षण करें, बहुत लोग करते हैं, सरकार करती है, समाज करता है। किंतु जनता को अधिक करना चाहिए। उससे हम एक संतुलन स्थापित कर सकें। आज जो कमी हो रही है उसको हम कैसे पूरा कर सकें। यदि इस दिन का उपयोग आत्मनिरीक्षण, आत्मलोचन और आत्म–परिष्कार के लिए हो तो विश्वास है स्वतंत्रता के दिन का आयोजन, उसे मनाने का प्रयत्न बहुत सार्थक हो सकेगा।

आचार्य महाप्रज्ञ

उदयपुर